सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

दिनांक 29 नवम्बर 2015, फरीदाबाद

! राधा–स्वामी.!

गुरू गोविंद दोनो खडे, किसके लागू पायं।

बलिहारी गुरू आपकी, जिन गोविंद दियो लखाय।।

गुरू और गोविंद दोनो खडे हैं, क्या ये दो हैं? ये दो नही हैं। भगवान कृष्ण, अर्जुन के गुरू थे। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान दिया और फिर गोविंद से मिलाया। कैसे? अपना विराट रूप दिखाया। तो भगवान कृष्ण ने अपना विराट रूप प्रगट किया और अर्जुन को दिखाया। तो क्या दिखाया उसको? अपना ही विराट रूप दिखाया। तो इससे क्या साबित होता है? इससे साबित होता है, कि दोनो एक ही हैं। वही गुरू है और वही गोविंद है।

ईरान के एक बहुत बडे संत थे समस तबरेज। एक औरत आई उनके पास, उस औरत के बच्चे को साँप ने डस लिया था, और कहने लगी– मेरे बच्चे को जिंदा करो। संत कहने लगा– माई मैं आपके बच्चे को जिंदा नही कर सकता हूँ, ये प्रकृति के खिलाफ है। वो औरत जिद पकड गई, तू खुदा का बंदा है, मेरे बच्चे को जिंदा करो। तो समस तबरेज ने कहा– मैं कोशिश करता हूँ। तो उसने बच्चे से कहा– तू खुदा के हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा नही हुआ। उसने दूसरी बार कहा– खुदा के हुक्म से जिंदा हो जा, बच्चा जिंदा नही हुआ। फिर उसने तीसरी बार कहा– मेरे हुक्म सें जिंदा हो जा, बच्चा एकदम जिंदा हो गया। इसका मतलब है– गुरू और गोविंद एक ही हैं, दो नही हैं। वही गुरू है और वही गोविंद है।

प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो ना समाई।

जब आपको वहाँ जाना होगा, तो एक होकर जाना होगा। गुरू और गोविंद को एक करना है, तब वहाँ जा सकोगे, प्रेम की गली को पार कर सकोगे। तो गुरू को हम क्या समझते हैं? गुरू उसी का ही रूप है। क्यों? उसका कोई रूप है ही नही। नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

रोज हम आरती में पढते हैं, लेकिन हम तोते की तरह रटते हैं। हमें पता ही नही है, हम बोल क्या रहे हैं? कम से कम एक बार समझ तो लें।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

उसका कोई रूप है ही नही, लेकिन हम सब उसी के रूप हैं। हम कैसे हैं उसी के रूप? मैं आपको Scientific Proof करके दे दूँगा। Scientist कहते हैं ये Univers जो है 14 बिलियन साल पुराना है, और हमारे संतमत में भी यही कहा गया है कि पहले कुछ नही था, और मालिक ने कल्पना की, मैं एक से अनेक हो जाऊँ और ये सारी कायनात खडी हो गई। उसने एक बिंदू पैदा किया और बिंदू में बिस्फोट किया, उसको Scientist बोलते हैं– Bing-Bang Theory, Bing Bang Theory एकदम Correct है। मालिक ने एक बिंदू पैदा किया और उसमे विस्फोट किया, और उसमे अब भी विस्फोट हो रहा है। हम कहते हैं– ये संसार नाशवान है, ये संसार ही नाशवान नही है, सारी कायनात नाशवान है। हजारों सूरज रोज पैदा होते हैं और रोज मरते हैं। कैसे मरते हैं? कल के पेपर Times of india में दिखाया गया है, एक Black Hole है, और वो इस सूरज से 10 हजार गुना बडा सूरज है, उसको खा रहा है। ये अमेरिका के Scientist ने देखा है। ये Law of Nature है, जो पैदा हुआ है, वो मरेगा। इस मृत्यु लोक में जो भी पैदा हुआ है, उसे एक दिन खत्म होना है।

तो मान लिया हमने 14 बिलियन साल हो गए इस कायनात को बने। तो उससे पहले क्या था? कुछ नही था। लेकिन हम ये नही कह सकते हैं कि कुछ नही था, कुछ तो था, जिसने वो बिंदू

बनाया, और जो कुछ था, उसमे हम भी थे। नही तो हम कहाँ से आये? हम भी उसी में थे, उस टाईम।

पहले ये पृथ्वी आग का गोला थी। फिर ये ठण्डी हुई और इसमें पानी और हवा की व्यवस्था की, ये मालिक का प्रोग्राम था। फिर इस पर वनस्पति आएगी, फिर पशु आएंगे, और फिर मनुष्य आएगा। तो मनुष्य कहाँ से आएगा? जो कुछ था पहले, मनुष्य उसी में था, और जो कुछ था, उसको कोई God बोलते हैं, कोई खुदा बोलता है। लेकिन था तो कुछ, और उसी था में हम भी थे। अगर वो God था, तो हम भी God थे। We are the part of God.वो Micro Cosm और हम Macro cosm, वो बडा रूप और हम उसी का छोटा रूप। तो हम क्या हैं? दाता दयाल ने कहा है–

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

हम वही हैं, हम उसी का रूप हैं। हम कहते हैं– हम मालिक के अंदर हैं, लेकिन ये भी सच है कि मालिक हमारे अंदर है। सागर की एक बूँद है, वो सागर में है, वो बूँद भी सागर है, और सागर भी बूँद है। क्योंकि एक–2 बूँद से सागर बना है। तो ये बूँद क्या है? बूँद भी सागर है। तो हम क्या हैं फिर?

गुरू गोविंद दोनो खडे किसके लागू पायं।

दोनो एक ही हैं, वही गुरू है, वही गोविंद है। इसलिए सब संत आज तक यही कह गए हैं कि तुम अपने आपको पहचानो, तुम कौन हो? अंग्रेज कहते हैं– self realization is god realisation, यानि जब तुम अपने आपको पहचानोगे तो तुमको पता लगेगा, God कौन है? God कहाँ हैं? कबीर साहब कहते हैं–

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।

लाली देखन मैं गई, मैं ही हो गई लाल।।

जब मैं उस लाली को ढूँढने गई, तो क्या देखा? अरे! वो तो मैं ही हूँ। जब हम Self Realization में जाते हैं, तो एक अवस्था ऐसी आती है कि हम उस Time कहते है, अरे जिसको मैं खोज रहा था, वो तो मैं ही हूँ, लेकिन कैसे? जब खोजना शुरू करोगे तब।

कबीर साहब कहते हैं–

जिन खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।

मैं अभागिन डूबन डरी, रही किनारे बैठ।।

जो किनारे पर बैठा रहेगा, उसे मोती नही मिलेगा। जो डुबकी लगाएगा मोती उसी को मिलेगा। इसलिए मनुष्य जन्म को सबसे श्रेष्ठ माना गया है। क्यों? क्योंकि हम सब उसी का रूप हैं।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

हम उसी का रूप हैं, इसलिए मनुष्य जन्म श्रेष्ठ है, और ये मनुष्य जन्म आसानी से नही मिलता है, और जब हमको ये मनुष्य जन्म मिल गया, हम इसकी कदर नही समझते हैं। शब्दानंद महाराज बोलते हैं– हम मनुष्य जन्म को कौढियों के भाव बेचते हैं। कबीर साहब कहते हैं– मेरा हीरा हिराना कचरे में।

मेरे पास एक हीरा था, वो इस कचरे में खो गया है। ढूँढों हीरे को, लेकिन हीरा ढूँढना हमारे अकेले के बस की बात नही है। किसी की सहायता लेनी पडेगी, और वो कौन है? वो है सतगुरू। कबीर साहब कहते हैं–

सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रतन यही है।

इस जग में अगर कोई दुर्लभ चीज है, तो वो है सतगुरू। दुनिया के सारे खजाने एक तरफ और सतगुरू एक तरफ। हमारी Choice है दुनिया के खजाने चाहोगे या सतगुरू चाहोगे।

सतगुरू कहता है–

सब करनी मैं आप कराऊँ, पहुँचा दूँ धुर दरबारा।

तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।।

गुरू कहता है सब कुछ मैं ही कराऊँगा, तुमको अपने साथ धाम भी ले जाऊँगा। लेकिन तुमको दो काम करने हैं, एक तो अपनी सारी चिंताएँ मुझे दे दो और मुझसे प्रेम करो। लेकिन हर कोई गुरू से प्रेम नही कर सकता है, गुरू के लिए तडप होनी चाहिए। आपको गुरू ढूँढने की जरूरत नही है, हर किसी का गुरू निश्चित है। जिस तरह आपका भविष्य पहले से ही तय हुआ है, इसी तरह से गुरू भी पहले से ही तय हुआ है। गुरू ढूँढने का एक ही तरीका है, वो है अपने अंदर एक तडप पेदा करो, मैं कौन हूँ? मालिक कौन है? मैं मालिक को कैसे पाऊँ? ये सवाल आप अपने अंदर पैदा करों ओर इन सवालों की गहराई में डूब जाओ। जब आपको इन सवालों के जबाब ढूँढने की तडप पैदा हो जाएगी, तब गुरू आपके सामने खुद चलकर आ जाएगा, या आपको कोई ईशारा देगा कि मैं वहाँ हूँ। ऐसा हुआ मानव दयाल जी महाराज एक बार अपने बहनोई के पास उनके घर में रूके थे। उनके बहनोई को बाबा फकीर के पास सत्संग सुनने के लिए जाना था। तो मानव दयाल महाराज ने कहा हम भी चलते हैं। जब दोनो गए और हॉल में प्रवेश किया, तो बाबा फकीर ने कहा– डॉ0 शर्मा आ जाओ, मैं आपका ही इंतजार कर रहा था, और अपने गले की मालाएँ उतार कर उनके गले में डाल दी। ऐसा ही महाराज सावन सिंह जी के साथ हुआ, वो मरी में थे। महाराज जैमल सिंह जी भी मरी पहुँच गए। तो एक सडक पर जब महाराज सावन सिंह जी जा रहे थे, तो जैमल सिंह जी महाराज ने अपने एक साथी से कहा देखो ये तुम्हारा Next गुरू। जब उनके साथी ने कहा कि इनको बुलाऊँ? तो जैमल सिंह जी महाराज ने कहा ये खुद आएगा मेरे पास, और जब शाम को सत्संग हुआ, तों महाराज सावन सिंह भी वहाँ पहुँच गए। तो गुरू खोजता है अपने चेले को।

तुलसी दास कहते हैं– ये संसार महा–मोह तम कुंज है। यानि अज्ञान के अंधकार का भंण्डार। यहाँ सब अज्ञानी हैं। अब ज्ञान क्या है? ज्ञान सिर्फ इतना है कि इस संसार में सच क्या है? और झूठ क्या है? 99 प्रतिशत लोग झूठ को सच समझकर बैठे हैं औक्र दुखी हैं। अब सच्चाई कैसे पता लगे उनको? सच्चाई बताने के लिए समय–समय पर गुरू आते हैं। अब झूठ और सच का पता लगाना कोई लंबी चौडी बात नही है। झूठ वो चीज है, जो हमारा साथ छोड देती है, यानि हम अपनी इन दो आँखों सें जो भी चीज देखते हैं, वो सब झूठ है। सच वो चीज है जो हमारा साथ कभी नही छोडती, यानि वो एक सतगुरू ही सच है।

कबीर साहब कहते हैं–

रहना नही देश बैगाना है।

ये संसार कागज की पुडिया, बूँद पडे गल जाना है।।

ये संसार काँट की बाडी, उलझ पुलझ मर जाना है।

कहत कबीर सुनो भाई साधु, सतगुरू नाम ठिकाना है।।

यें संसार कागज की पुडिया के समान है, पानी की एक बूँद गिर गई, सब गल जाता है। काठमाण्डु शहर कितना खूबसूरत था। लाखो मकान वहाँ पर थे। सब लोग कहते थे, ये मेरा घर है, ये मेरा घर है। एक भूकंप के झटके से कुछ मर गए और कुछ सडक पर आ गए और सडक के किनारे सर्दी में सिकुड रहें हैं। जापान में एक सुनामी आयी और जितने भी तट वर्तीय शहर थे, सबको अपने साथ बहा ले गई। यही तो कहते हैं कबीर साहब, आप इन दो आँखों से जो भी कुछ देख रहे हो, वो सब नाशवान है, उस पर भरोसा मत करो। घर में सब कुछ रखो, धन कमाओ, ईमानदारी से कमाओ, ईमानदारी से खर्च करो, कार रखो, टी. वी. रखो, लेकिन मन में ये रखो कि मेरा कुछ भी नही है। किसी भी टाईम मुझसे छूट जाएगा। यही कहते हैं कबीर साहब–

कहत कबीर सुनो भाई साधु, सतगुरू नाम ठिकाना है।

अब हम सतगुरू कहाँ से देखेंगे? इन चमडों की आँखों से आप सतगुरू नही देख सकते हो। सतगुरू को हम तीसरी आँख (शिव नेत्र) से देख सकते हैं, और वही सच है, बाकी सब झूठ है।

!! राधा स्वामी !!